लोकमान्य बालगंगाधर तिलक के सामाजिक एवं धार्मिक विचारों का समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ. कुलदीप मिश्रा
सहायक आचार्य, श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय,
केशव विद्यापीठ, जामडोली, जयपुर

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र लोकमान्य बालगंगाधर तिलक के सामाजिक एवं धार्मिक विचारों के समीक्षात्मक अध्ययन पर आधारित है। तिलक के माता–पिता धार्मिक प्रवृत्ति के थे। उन्होंने अपने पिता से विद्या और अपूर्व प्रतिभा तथा समाज सुधार संबंधी विचार एवं माता से धार्मिक भावना के संस्कार विरासत के रूप में प्राप्त किये। तिलक ने दर्शन, उपनिषदों वेदान्त दर्शन आदि का अध्ययन किया था किन्तु धार्मिक भक्ति के लिए वे वैयक्तिक ईश्वर की धारणा को स्वीकार करते थे। उन्होंने हिन्दू धर्म पर एक भाषण में कहा की वास्तविक दृष्टिकोण से धर्म में ईश्वर तथा आत्मा के स्वरूप का ज्ञान तथा मनुष्य द्वारा मोक्ष की प्राप्ति के साधन सम्मिलित है और यही धर्म का सही अर्थ है। तिलक का सामाजिक सुधारों के संबंध में एक निश्चित दृष्टिकोण था। वे सरकार की सहायता से समाज सुधार करना अनुचित मानते थे। इसके साथ ही देश के रीति–रिवाजों, संस्थाओं, आदतों व तरीकों की निन्दा नही करना चाहते थे, बल्कि वे भारतीय संस्कृति व इतिहास को प्रेरणा का स्त्रोत मानते थे। उन्होंने जन जागृति के माध्यम से ही सामाजिक सुधारों को व्यवहारिक रूप देने का प्रयास किया। तिलक ने इस बात पर बल दिया कि चरित्र का निर्माण करने के लिए धार्मिक शिक्षा आवश्यक है, क्योकि उच्च धार्मिक सिद्धान्तों का अध्ययन हमे बुरे कार्यो से दूर रखता है तथा धर्म से ही सर्व शक्तिमान परमात्मा के स्वरूप का बोध होता है।

प्रस्तावना

तिलक एक महान राष्ट्रीयवादी थे, उन्होंने सामाजिक एवं धार्मिक विचारों के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया। बालगंगाधर तिलक दर्शन के क्षेत्र में अद्वैतवाद को तथा वेदान्त को मानते थे, वह धर्म में आस्था रखते थे, उनके अनुसार सही धर्म अर्थ था ''ईश्वर तथा आत्मा के स्वरूप का ज्ञान तथा मनुष्य द्वारा मोक्ष की प्राप्ति के साधन'' तिलकजी का विश्वास अवतारवाद मे था तथा कर्मकाण्ड के भी वह पूरी तरह से विरोधी नही थे। तिलकजी की दृष्टि में ''धर्म राष्ट्रीयता का एक तत्व है'' चूँकि उनकी दृष्टि में राष्ट्रीयता धर्म के साथ जुडी थी, अतः उन्होंने हिन्दू राष्ट्र की अवधारणा को भी ग्रहण किया ''यदि हम विभिन्न सम्प्रदायों के साधारण भेदों को भूल जाएं और अपनी समान विरासत को मूल्यवान समझें, तो ईश्वर की कृपा से हम शीघ्र ही विभिन्न सम्प्रदायों को शक्तिशाली हिन्दू राष्ट्र के रूप में संगठित करने में सफल जो जाएंगे''। तिलकजी के धार्मिक विचारों ने उनकी राष्ट्रीय शिक्षा की अवधारणा को भी प्रभावित किया। तिलकजी की धार्मिक शिक्षा का तात्पर्य साम्प्रदायिक अथवा साम्प्रदाय विशेष के धर्म की शिक्षा से नही था, ''उनके अनुसार स्कूलों में हिन्दुओं को हिन्दू धर्म और मुसलमानों को इस्लाम की शिक्षा दी जाएगी और वहा यह भी सिखायाँ जायेगा कि मनुष्य को दूसरे धर्मों के भेदों को भूलना और क्षमा करना चाहिए''

समाज सुधार के क्षेत्र में तिलकजी सुधारों की आवश्यकता को स्वीकार करते थे, किन्तु वह किसी भी प्रकार की बुनियादी सामाजिक क्रान्ति तथा समाज सुधार के क्षेत्र में विदेशी शासन के हस्तक्षेप और उनके साथ सहयोग के कट्टर विरोधी थे, उनका मानना था कि देश के अन्दर मुख्य प्रश्न राजनीति का था, समाज सुधार बाद की बात थी, ये सुधार धीरे–धीरे किए जा सकते थे, अपने इन्हीं विचारों के कारण तिलकजी ने 1891 के स्वीकृति आयु अधिनियम का विरोध तथा वयस्क विवाह का समर्थन किया, नागपुर के सामाजिक सम्मेलन (1891) में विधवा विवाह का समर्थन किया, उन्होंने रमाबाई द्वारा स्थापित शारदा सदन विधवाश्रम में विधवाओं को ईसाई बनाने का विरोध किया।

अध्ययन का उद्देश्य

1. तिलक के समाज सुधार संबंधी विचारों का अध्ययन।
2. तिलक के धार्मिक विचारों का अध्ययन।

संदर्भित साहित्य का विवरण

किसी भी शोध कार्य का अध्ययन करने के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यो के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर लें। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के सामाजिक एवं धार्मिक विचारों के समीक्षात्मक अध्ययन के संदर्भ में पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी पुस्तकों, पत्र पत्रिकाओं, शोध प्रबन्ध, लघु शोध प्रबन्ध, इन्टरनेट, शोध अध्ययन एवं प्रकाशित साहित्य के माध्यम से प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है– डॉ. बाखे एस. एम. (1983), केसरी एच. (1986), डॉ. शर्मा मुनिन्द्र (1999), यादव वी.के. (2000), शर्मा भावना (2005), रहबर हंसराज (2007), चौबे एस.पी. (2007), श्रीवास्तव रश्मि (2011)

शोध विधि का चयन

प्रस्तुत शोधकार्य में दार्शनिक विधि, ऐतिहासिक विधि, विश्लेषण एवं विवेचन विधि का प्रयोग किया है।

तिलक के सामाजिक विचारों का अध्ययन

बाल गंगाधर तिलक सामाजिक परिवर्तन में विश्वास रखते थे, लेकिन सरकार के सहयोग से वे परिवर्तन के विरोधी थे। उनकी धारणा थी कि समाज में सुधार का भाव अन्दर से पैदा होना चाहिए और सुधारों की बात उसी समय कि जानी चाहिए जबकि लोग जीवन में उनको साकार करना चाहते हो। उन्होंने आयरलैण्ड़, बर्मा व श्रीलंका के उदाहरण देकर लोगों को यह अवगत करवाया कि इन देशों में सामाजिक स्वतंत्रता होते हुए भी यह राजनैतिक दृष्टि से स्वाधीन न थे। इसी पृष्ठभूमि में निम्न बिन्दुओं द्वारा तिलक के समाज सुधार संबंधी विचारों को समझा जा सकता है:–

•बाल विवाह का विरोध

तिलक शुरू से ही बाल विवाह के विरूद्ध थे हालांकि उनका विवाह भी बचपन में हो गया था। उन्होंने उसका विरोध किया लेकिन उनके पिता का स्वास्थ्य खराब होने के कारण उन्हें उनकी बात माननी पड़ी। उन्होंने अपनी बेटियों की शादी भी छोटी उम्र में नहीं की जब लडकियों की शादी की उम्र बढाने के संबंध में इम्परीयिल कौन्सिल में 9 जनवरी 1891 को एक बिल प्रस्तुत हुआ जिनमें लड़की की विवाह योग्य आयु 10 वर्ष से 12 वर्ष करने का भी विधान था। तिलक इस बिल के विरोधी थे क्योंकि वे चाहते थे कि कन्याओं का विवाह 16 वर्ष पहले न हो और लड़कों का विवाह 20 वर्ष की आयु पर होना चाहिए। वे कानून के माध्यम से समाज सुधार के पक्ष में नहीं थे क्योंकि बचपन में विवाह कर देने से बच्चे अपनी पढ़ाई पूरी नहीं कर पाते हैं और न ही बाल्यवस्था में पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभा सकते है।

•विधाव विवाह का समर्थन

तिलक विधवा विवाह के समर्थक थे। उन्होंने विधवाओं की सामाजिक स्थिति सुधारने का प्रयत्न किया। साथ ही इस बात पर बल दिया कि समाज में विधवाओं को कुरूप न किया जाये, उन्हें हीन दृष्टि से न देखा जाये, उन पर किसी प्रकार का अत्याचार न किया जाये। यदि कोई पुरूष दुबारा विवाह करना चाहता है तो उसे विधवा से ही विवाह करना चाहिए तथा विधवाओं को समाज में सम्मान की दृष्टि से देखा जाना चाहिए।

•स्त्री शिक्षा के समर्थक

तिलक शुरू से ही स्त्री शिक्षा के समर्थक थे। उन्होंने अपनी पत्नी को शिक्षा ग्रहण करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने अपनी लड़कियों को भी स्कूल में शिक्षा दिलाई। उनका यह मानना था कि स्त्री शिक्षा से समाज में जागृति उत्पन्न हो सकती है और इससे सामाजिक सुधारों में भी परिवर्तन होगा। उन्होंने अपने न्यू इंगलिश स्कूल में

लड़कियों को भी शिक्षा प्रदान की। यदि लकड़िया पढ़ी लिखी होगी तो परिवार की स्थिति में सुधार आएगा और वे अपने बच्चों को भी अच्छे संस्कार दे सकती है जिससे भावी राष्ट्र के नागरिक उच्च संस्कारों से युक्त होंगे।

•अस्पृश्यता या छूआछूत की प्रथा के विरूद्ध

तिलक ने छूआछूत की प्रथा का विरोध किया। 4 अक्टूबर 1980 का दिन पूना के सामाजिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण दिन बन गया क्योंकि उस दिन तिलक व गोखले समेत कई लोगों ने ईसाई मिशनरी के घर चाय पी जिससे उन पर मुदकता दायर किया लेकिन इस कार्य में तिलक सफल रहे। तिलक ने गणेश उत्सव के जलूसों में नीची जातियों के लोगों को ऊँची जाति के सदस्यों के साथ अपनी गणेश प्रतिमाएं लेकर चलने की आज्ञा प्रदान की। तिलक ने प्रथम दलित वर्ग सम्मेलन के भाषण में घोषणा की कि अस्पृश्यता का अन्त होना चाहिए। उन्होंने सभी भारतवासियों को एक ही मातृभूमि की सन्तान कहा। उन्होंने कहा था कि – ''यदि ईश्वर भी अस्पृश्यता को सहन करने लगे तो मैं ऐसे ईश्वर को कतई नहीं मानूंगा। वे किसी के साथ भेदभाव नहीं करते थे और सबके घर जाते थे।

•जन शिक्षा के समर्थक

तिलक जन शिक्षा के प्रबल समर्थक थे उनका मानना था कि जब तक साधारण जनता को शिक्षा नहीं दी जाएगी तब तक देश में जागृति उत्पन्न नहीं होगी। स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए जन शिक्षा जरूरी है, क्योंकि तिलक जनता को सबसे बड़ी शक्ति मानते थे और जब तक साधारण जनता शिक्षित नहीं होगी तो न जागृति उत्पन्न होगी और न ही देश का विकास हो सकता है। किसी भी राष्ट्र की उन्नति का श्रेय वहां की शिक्षित जनता को जाता है।

•दहेज प्रथा के विरोधी

तिलक दहेज प्रथा के भी विरूद्ध थे। उन्होंने यह सुझाव दिया था कि दहेज प्रथा को समाप्त कर देना चाहिए क्योंकि दहेज प्रथा समाज की बहुत गम्भीर समस्या है।

•नशीली वस्तुओं का विरोध

तिलक ने शराब बन्दी का आन्दोलन चलाया क्योंकि शराब से भारतीय संस्कृति के मूल्यों का ह्रास होता है। शराब बन्दी आन्दोलन से सरकार को काफी आघात पहुंचा क्योंकि इससे सरकार को काफी मुनाफा था। लेकिन तिलक ने इस पर रोक लगाई। उन्होंने मद्य निषेध के लिए सक्रिय होकर कार्य किये। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि नशीली वस्तुओं का सेवन नहीं करना चाहिए।

•पर्दा प्रथा के विरोधी

तिलक स्वतन्त्र विचारधारा के थे उन्होंने हमेशा पर्दा प्रथा का विरोध किया। उन्होंने अपने घर में भी स्त्रियों को पर्दा नहीं करने दिया। उनकी काकी ने एक बार उनकी पत्नी के पर्दा करने पर कहा था कि तिलक पर्दा प्रथा का घोर विरोध करने वालों में से एक है उनके सामने पर्दा मत करना। वे स्त्रियों को स्वतन्त्रता के पक्ष में थे। वे पर्दा प्रथा को एक बुराई मानते थे। तिलक ने पत्रकारिता के माध्यम से भी इसका विरोध किया।

तिलक के धार्मिक विचारों का अध्ययन

•तिलक बचपन से ही धार्मिक प्रवृति के थे। उन्हें ये गुण अपनी माता से विरासत में मिला था उनकी हिन्दू धर्म में विशेष आस्था थी। धर्म उनके लिए प्रेरणास्त्रोत था। तिलक का बचपन प्राचीन परम्पराओं के पालन, कर्मकाण्ड की अनुरक्ति व विद्या अध्ययन व्यतीत हुआ।

•तिलक का अवतार में विश्व था। वे कृष्ण को ईश्वर का अवतार मानते थे। वे महान दार्शनिक थे। वे ऋषियों व योगियों द्वारा साक्षात्कृत रहस्यात्मक अनुभूतियों को स्वीकार करते थे। उनका विचार था कि गृहस्थ जीवन को धारण करने वाला कर्म योगी भी मोक्षदायी परम ज्ञान को प्राप्त कर सकता है। उन्होंने सनातन धर्म को सबसे प्राचीन धर्म कहा है– हिन्दू धर्म अनेक अंगों के संयोग से बना है।

•धर्म का अर्थ : धर्म का शाब्दिक अर्थ बन्धन और वह कृति धातु से व्यत्पन्न हुआ है धृति का अर्थ है धारणा करना, परस्पर बांधकर रखना। गीता, रामायण, महाभारत के पाठ से सम्पर्ण देश में एक ही विचार उत्पन्न होते है।

•आध्यात्मिक एकता : वे साम्प्रदायिक दंगों में विश्वास नहीं करते थे। तिलक समझते थे कि आधुनिक विज्ञा प्राचीन हिन्दूओं के ज्ञान को प्रामाणित कर रहा है। वेदान्त व योग की आधुनिक विज्ञान द्वारा पूर्णतः पृष्टि हो चुकी है, इन दोनों का उद्वेश्य आध्यात्मिक एकता प्रदान करना है।

•सभी ग्रन्थों की मुख्य बिन्दु : उन्होंने गीता रहस्य के माध्यम से लोगों को उपदेश दिया है। उन्होंने कुरान बाइबिल आदि का भी अध्ययन किया और उन्होंने सभी ग्रन्थों की मुख्य बातों को एकत्रित किया।

•ब्रह्म के साथ एकात्मय स्थापित करना : उन्होंने बताया कि गीता में ब्रह्म के साथ एकात्मय स्थापित हो जाने पर भी कर्म करते रहने का उपदेश दिया गया है। वे सभी धर्मों का सम्मान करते थे। उन्होंने अपने विद्यालय में भी धार्मिक शिक्षा देने पर बल दिया था कि हिन्दूओं की हिन्दू धर्म व मुसलमानों को मुस्लिम धर्म की शिक्षा दी जानी चाहिए। उनका विचार है कि संसार की सेवा करना और उसकी (ईश्वर) इच्छा की सेवा करना मोक्ष प्राप्ति का सर्वाधिक सुनिश्चित मार्ग है।

•निष्काम कर्म व भक्ति के बीच समन्वय : उन्होंने गीता के माध्यम से यह बताया कि निष्काम कर्म योग ज्ञान, भक्ति तथा कर्म के बीच समन्वय स्थापित करता है। उन्होंने आध्यात्मिक शिक्षा पर भी बल दिया है। मानव मूल्यों को ऊंचा उठाने के लिए आध्यात्मिक शिक्षा जरूरी है। लेकिन वे भारतीय लोगों को अपना धर्म परिवर्तन करके इसाई बनाने के पक्ष में नहीं थे। वे हिन्दू धर्म को श्रेष्ठ मानते थे और भारतीयों को अपने धार्मिक रीति–रिवाजों को अपनी इच्छानुसार निभाने की स्वतन्त्रता होनी चाहिए। वे ईश्वरीय भक्ति में पूरी विश्वास करते थे।

•सामूहिक पूजा में विश्वास : तिलक ने हिन्दूओं में सामूहिक पूजा की नींव डाली तथा हिन्दू समाज के लिए बडी संख्या में एक स्थान पर एकत्रित होने का रास्ता तैयार किया। तिलक धार्मिक पर्वो के माध्यम से जन मानस को जागृत करना एक पवित्र कार्य मानते थे। उन्होंने रामलीला और दुर्गा पूजा की तर्ज पर 'गणेश चतुर्थी उत्सव' और 'शिवाजी उत्सव' नामक मेलों का महाराष्ट्र में शुभारम्भ किया जिससे लोगों में एकता व राष्ट्रीयता की भावना जागृत हुई।

•एकता स्थापित करना : उन्होंने हिन्दुओं को मुस्लिम पर्वो में व मुस्लमानों को हिन्दुओं के धार्मिक पर्वो में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने हिन्दु मुस्लिम एकता स्थापित करने का प्रयास किया ताकि देश में एकता स्थापित हो सके। अनेक मुसलमान नेता उनकी सराहना करते थे। इस प्रकार तिलक के धार्मिक विचारों से भी भारत में राष्ट्रीयता के भाव जाग्रत हुए।

अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष

- तिलक ने जन शिक्षा को महत्व दिया। राष्ट्र के विकास के लिए जन शिक्षा अत्यन्त आवश्यक है। यदि साधारण जनता शिक्षित नहीं होगी तो राष्ट्र उन्नति नहीं कर सकता। जनशिक्षा के विकास के लिए प्रचार–प्रसार किया।
- उन्होंने आध्यात्मिक शिक्षा पर जोर दिया। आध्यात्मिक शिक्षा के बिना व्यक्ति अपना विकास नहीं कर सकता है। आज पाठ्यक्रम में आध्यात्मिक शिक्षा को शामिल करना जरूरी है।
- उन्होंने सामाजिक बुराईयों को दूर करने में शिक्षा का महत्व बताया। यदि लोग शिक्षित होंगे तो सामाजिक परिवर्तन अपने आप हो जाएगा और सामाजिक कुरीतियों का अन्त हो जाएगा।

- तिलक स्त्री शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। राष्ट्र के विकास में स्त्रियों का भी योगदान रहता है। यदि स्त्रियां पढ़ी–लिखी होंगी तो वे अपने बच्चों को शिक्षित कर सकेंगी और भावी पीढ़ी में नये विचारों का उदय होगा, जो राष्ट्र की उन्नति में सहायक होगा।
- तिलक ने कर्मयोग पर बल दिया। मनुष्य को हर समय कर्म करते रहना चाहिए। उन्होंने गीता रहस्य के माध्यम से निष्काम कर्म की प्रेरणा दी। व्यक्ति को बिना फल की इच्छा किये कर्म करते रहना चाहिए।
- उन्होंने पाठ्यक्रम में धार्मिक शिक्षा को भी शामिल करने को कहा क्योंकि धार्मिक शिक्षा के बिना व्यक्ति अपना पूर्ण विकास नहीं कर सकता है। धार्मिक शिक्षा से ही हमें धर्म–अधर्म व सही–गलत का पता चलता है। कोई भी धर्म आपस में लड़ने की प्रेरणा नहीं देते।
- उन्होंने गृहस्थ आश्रम में रहकर भी मोक्ष प्राप्ति का रास्ता बताया। गीता के माध्यम से उन्होंने मोक्ष प्राप्ति के साधन बताये है। मोक्ष के लिए सन्यास लेना जरूरी नहीं है। गृहस्थ आश्रम में रहकर भी ईश्वर भक्ति की जा सकती है।
- राष्ट्रीय एकता के लिए राष्ट्र के नागरिकों में जागृति उत्पन्न करना व राष्ट्रीयता की भावना पैदा करना जरूरी है। तिलक ने लोगों में देश भक्ति व राष्ट्र प्रेम की भावना कूट–कूट कर भर दी थी। उन्होंने पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से भी इसका प्रचार किया।
- उन्होंने सामाजिक बुराईयों को दूर करने में शिक्षा का महत्व बताया। यदि लोग शिक्षित होंगे तो सामाजिक परिवर्तन अपने आप हो जाएगा और सामाजिक कुरीतियों का अन्त हो जाएगा।
- उन्होंन छुआछूत का विरोध किया और जन सेवा का उपदेश दिया। वे जन सेवा को ही ईश्वर सेवा मानते थे। बिना किसी भेदभाव के सबको एक नजर से देखना चाहिए।
- उन्होंने बाल विवाह का विरोध किया। भावी पीढ़ी पर इसका प्रभाव पड़ता है। यह एक सामाजिक बुराई है। इसको समाप्त किया जाना चाहिए। विवाह की आयु बढ़ानी चाहिए। वे वयस्क विवाह के समर्थक थे।
- उन्होंन विधवा विवाह का समर्थन किया और विधवाओं को सम्मान की दृष्टि से देखने की बात कही। विधवाओं के साथ दुर्व्यवहार नहीं किया जाना चाहिए। समाज सुधारकों को भी विधवा विवाह समारोह में शामिल होना चाहिए। उन्हें समाज में हीन दृष्टि से नहीं देखना चाहिए।

तिलक के सामाजिक एवं धार्मिक विचारों की वर्तमान में उपादेयता

तिलक के सामाजिक एवं धार्मिक विचारों का अध्ययन करने के पश्चात शोधकर्ता ने पाया कि इसकी वर्तमान समय में निम्न लिखित उपादेयता है–

- तिलक ने स्त्री शिक्षा पर विशेष बल दिया तथा स्त्री सुधार हेतु अनेक कार्य किये। पर्दा प्रथा का विरोध किया, बाल विवाह का विरोध किया जो वर्तमान में सामाजिक ढ़ांचे को सुधारने हेतु बहुत ही प्रासंगिक व उपादेय है।
- तिलक द्वारा किये गये समाज सुधार के कार्य जैसे मद्यनिषेध, स्त्री शिक्षा, राष्ट्रवाद, जन शिक्षा आदि के कार्य वर्तमान समाज में प्रासंगिक है। आज उनकी बहुत आवश्यकता है।
- वर्तमान समय में शिक्षा के पाठ्यक्रम में तिलक के अनुसार ही आदर्शों, परम्पराओं, रीति–रिवाजों व नैतिक मूल्यों को स्थान दिया जाना चाहिए क्योंकि वर्तमान समय में विद्यार्थियों में इन मूल्यों का ह्रास हो रहा है।
- शोधकर्ता ने अपने अध्ययन में पाया कि तिलक के शिक्षा संबंधी विचार बड़े व्यापक थे वे किसी एक धर्म की शिक्षा प्रदान करने के पक्ष में नही थे। वे धर्म को साम्प्रदायिकता से अलग रखना चाहते थे।
- तिलक ने सांसारिक विषयों के साथ आध्यात्मिक विषयों के अध्ययन पर बल दिया जो सार्थक प्रतीत होता है। आज के युग में आध्यात्मिक विचारों का ह्रास होता जा रहा है। पाठ्यक्रम में आध्यात्मिक विषयों को शामिल करना चाहिए।
- जन शिक्षा का प्रचार किया। उन्होंने इस बात को महत्व दिया है कि जनता देश की सबसे बड़ी शक्ति होती है। इसलिए साधारण जनता को शिक्षित करना बहुत जरूरी है। तिलक के इन विचारों का आज भी बहुत महत्व है। आज अशिक्षित लोग देश की भलाई के बारे में नहीं सोच सकते। इसलिए साधारण जनता को शिक्षित करना आवश्यक है।

संदर्भग्रंथ सूची

1. यादव, वी.के., 2000, प्रमुख भारतीय शिक्षा दार्शनिकों के शैक्षिक विचारों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उपादेयता का अध्ययन
2. बाखे, एस.एम. 1983, लोकमान्य बालगंगाधर तिलक और विवेकानन्द के शिक्षा दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन
3. बाल गंगाधर तिलक : गीता रहस्य, कर्मयोग शास्त्र–I
4. बाल गंगाधर तिलक : गीता रहस्य, श्रीमद् भगवत गीता–II
5. सिंह, गजेन्द्र : बालगंगाधर तिलक, न्यू साधना पाकेट बुक्स, रोशन आरा रोड़, दिल्ली
6. सिंह,ओ.पी. शिक्षा दर्शन एवं शिक्षा शास्त्री, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद
7. तिलक : महान व्यक्तित्व, सी.बी.टी. प्रकाशन
8. रमन बिहारी लाल : शिक्षा के दार्शनिक व समाज शास्त्रीय आधार
9. रश्मि श्रीवास्वत, 2011, लोकमान्य बालगंगाधर की शैक्षिक विचारधारा
10. रामशकल पाण्डेयः शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्री पृष्ठभूमि, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
11. सत्यपाल, रूहेलाः शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्री आधार, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा
12. वर्मा, वी.पी., 2002, आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तक
13. चौबे, एस.पी.एवं अखिलेश चौबे : शिक्षा के दार्शनिक समाज शास्त्रीय आधार इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस, मेरठ
14. चौबे, एस.पी., चौबे, अखिलेश, 2007, एजूकेशनल थिंकर्स, नीलकमल पब्लिकेशन, हैदराबाद
15. ओड, लक्ष्मी लाल के, 1994, शिक्षा की दार्शनिक पृष्टभूमि, राजस्थान, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
16. गुप्त, लक्ष्मी नारायण, 1992, महान पाश्चात्य एवं भारतीय शिक्षा शास्त्री, कैलाश प्रकाशन, इलाहाबाद